कवि-परिचय :

नाम : राकेश प्रियदर्शी

पिता के नाम : रामचंद्र चौधरी

जनम-तिथि : 23.1.1977

जनम-अस्थान : कराय, नालंदा

निवास : दुर्गा आश्रम गली, शेखपुरा, पटना

विभिन्न पत्र-पतरिका में इनकर सौ से ऊपर गीत, गजल, कविता, कहानी रिपोर्ताज, रेखांकन आदि छपल हे। जेकरा में रेखांकन हिंदी मासिक पत्रिका 'हंस' के सत्ता-विमर्श आउ दलित में परकासित भेल।

इनकर कविता युद्धरत आम आदमी, अपेक्षा, दलित साहित्य, कथादेश, मंडल-विचार, सम्प्रति पथ आदि पत्रिका में छप चुकल हे।

राकेश प्रियदर्शी नयकी पीढ़ी के जानल-मानल कवि हथ। इनकर रचना में दलित चेतना गहराई रूप से आयल हे। ई कविता में कवि दलित वर्ग के उत्थान के वकालत कैलन हे। कवि के कहना हे कि उनकर विकास बिना सब विकास अधूरा रह जायत।

इतिहास

कई जुग में ऊ बंजर जमीं पर
पानी, खाद डाले के बदले
राख, बालू आउ पत्थर डालल गेल
बन गेल ऊ विसाल, सांत पहाड़

कई सौ साल से ऊ सूरज के साजिस

के सिकार रहल

अन्धेरा में तड़पते, घुटते रहल;
कई सौ साल से ऊ सांत पहाड़ में
अरबो टन आग के गोला जमा हे

रोसनी में रहेवला सब,
ऊ अन्हरिया में रोसनी जाय दऽ
न तऽ
कई सदी से चुपचाप रहित अइते
ऊ ज्वालामुखी एकाएक विस्फोट कर जइतो,
अप्पन आग से जला जइतो

कई सदी के सांति जब भंग होवऽ हे
तऽ अकास के पन्ना पर भी
क्रान्ति के इतिहास लिखा जा हे

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. बंजर जमीन के अर्थ समझावऽ ।
2. राख, बालू, आउ पत्थर कहाँ डालल गेल ?
3. सूरज के सिकार कउन भेल ?
4. आग के गोला कहाँ जमा हे ?
5. सांति काहे जरूरी हे ?

लिखित :

1. पहाड़ कइसे बनऽ हे ?
2. पानी, खाद के केकरा जरूरत हे ?
3. अन्हरिया में केकरा रखल जा रहल है?
4. ज्वालामुखी फटला पर का होवऽ हे ?
5. सांति कइसे भंग हो सकऽ हे ?

6. नीचे लिखल पद्यांस के सप्रसंग व्याख्या करऽ :

(क) कई जुग में ऊ बंजर जमी पर
पानी, खाद डाले के बदले
राख, बालू आउ पत्थर डालल गेल
बन गल ऊ विसाल, सांत पहाड़

(ख) कई सदी के सांति जब भंग होवऽ हे तऽ अकास के पन्ना पर भी क्रान्ति के इतिहास लिखा जाहे।

7. कविता के भाव आउ सिल्प-सौन्दर्य के बरनन करऽ।

भासा-अध्ययन :

1. अकास के पन्ना पर क्रांति के इतिहास के व्याख्या करऽ।
2. नीचे लिखल सबद के पर्यायवाची सबद दऽ :
पानी, पहाड़, अन्हेरा, अकास, सूरज
3. नीचे लिखल सबद के विपरीतार्थक सबद लिखऽ :
बंजर, सांत, रोसनी, अकास, आग
4. कविता से चार-गो संग्या सबद चुन के लिखऽ।
5. नीचे लिखल सबद से बिसेसन बनावऽ।
पत्थर, सूरज, साल, इतिहास

योग्यता-विस्तार :

1. ई कविता से मिलइत जुलइत कठनो कवि के कविता चुन के लावऽ आउ कलास में कविता पाठ करऽ।
2. दलित विमर्स आउ दलित-चेतना में फरक समुझावऽ।

सब्दार्थ :

बंजर	:	परती
खाद	:	फसल के उपजाऊ बनावेला खेत में डालल गेल पदार्थ
साजिस	:	खुराफात, सडयंत्र
सदी	:	सौ साल
विसाल	:	बड़कागो, लमहर

●

पाठ्यक्रम

1. पाटलि भाग–2, बरहमा कलास के विद्यार्थी पढ़तन। ग्यारहमा के बाद बरहमा में विद्यार्थी के भासा–कौसल के विकास के स्तर बढ़ा देवल जाय। सुनना, बोलना, पढ़ना आउ लिखना आदि कौसल में वृद्धि करे के कोसिस कैल जायत।

सिरजनात्मक साहित आउ आलोचनात्मक छमता के विकास ला पिछला साल से बरहमा साल में जादे उर्जा के जरूरत पड़त। ई लेल विद्यार्थी के स्वतंत्र आउ मौखिक रूप से अप्पन विचार के अभिव्यक्त करे के कौसल में स्तरीयता के बढ़ावे के कोसिस करना उद्देस्य होवत। अइसन छमता के विकास करना, जेकरा से रास्ट्रीयता, धर्म, लिंग, भासा आदि के प्रति छात्र–छात्रा आउ जादे संवेदनसील सकारात्मक दृस्टि से सम्पन्न हो सकथ।

2. छात्र के ग्यान के छेत्तर इहाँ बढ़ जायत ताकि बरहमा कलास में पढ़ाई करला के बाद ऊ अखबार में आवेवाला व्यक्ति, परिवेस, समाज, संस्कीरती आदि के जानकारी रख सके।

3. बरहमा कलास में छात्र के मानसिक दच्छता आउ कौसल के अइसन विकास करे के परक्रिया बनावल जायत कि छात्र–छात्रा वाद–विवाद, परिचर्चा, भासन आदि में पहिले से अधिक समर्थ प्रतिभागिता के प्रमान दे सके। मतलब ई भेल कि ओकर मानसिक, बौधिक, आत्मिक आउ सारीरिक गुन के विकास ई ढंग से करल जाए कि ओकर व्यक्तित्व निरमान पहिले से जादे समृद्ध आउ सम्पन्न हो सके।

4. भारत विविधता में एकता वाला देस हे। ई लेल मगही भासा आउ साहित के माध्यम से भारत के समृद्धि, सांस्कृतिक विविधता आउ विरासत छात्र–छात्रा आउ अधिक अच्छा ढंग से समझ सके, ओकरा आत्मसात कर सके। अइसन समझदारी पैदा करना जरूरी हे कि ऊ जातिवाद, वर्गवाद, ऊँच–नीच के संकीर्न मनोभाव के दूर कर सके आउ धर्म–सम्प्रदाय के प्रति कट्टरता दूर कर के अप्पन

दिल–दिमाग में सहिस्नुता, सदभाव, उदारता आउ सहज अपनापन के भाव उत्पन्न कर सके।

5. बरहमा कलास में पहुंचित–पहुँचित विद्यार्थी के मानसिक, आत्मिक आउ सारीरिक छमता के अइसन विकास हो सके जेकरा से ऊ अप्पन उत्तरदायित्व के समझ सके आउ आगे वाला भविस्य में ऊ एक कर्त्तव्यनिस्ठ नागरिक के रूप में प्रस्तुत हो सके। पाठ्य–पुस्तक के अलावे अइसन तरीका विकसित कैल जाए कि अप्पन मनचाहा ग्यान, समझ, दृस्टिकोन, अभिरुचि, संस्कार के बढ़ावे आउ सँवारे में सफल हो सके। ओकर संवादी चेतना के जादे से जादे विकास करे पर धेयान केन्द्रित करल जाए।

6. आज आधुनिक समाज परतच्छ इया अपरतच्छ रूप से विविध सरोकार से जुड़ गेल हे। ई लेल पर्यावरन, परिवेस, संवैधानिक दायित्व, लोक संस्कृति, व्यापार, वानिज्य, विविध व्यवसाय, बाजार, सिनेमा, खेल जगत, नाटक, नृत्य, संगीत, उद्योग–धंधा, कृसी, मीडिया, विग्यान जगत, परबत, समुद्र, अंतरिच्छ विग्यान, राजनीति आउ धर्म–विज्ञान के समझदारी पैदा हो सके।

7. ग्यारहमा में विद्यार्थी के साहित के विविध विधा से परिचित करावल गेल हे। इहाँ ई कोसिस करावल जायत कि ऊ सब्भे विद्या से परिचित हो जाए आउ ओकर कौसल के विकास हो जाए।

8. मौलिकता, कल्पना, सिरजनात्मकता आउ सौंदर्यप्रियता के अलावे विविध भाव–बोध भावना के विकास करना।

9. ग्यारहमा वर्ग के बच्चा किसोरावस्था के अंतिम देहरी पर पहुँच जा हे ई लेल किसोर मनोविज्ञान के धेयान में रख के ओकर मनोवैज्ञानिक जिग्यासा के पूर्ति करना।

10. मगही भासा–साहित के अध्ययन से छात्र के मनोभाव के उदात्त बनाना आउ ओकरा में सदवृति के विकास करके चरित्र निरमान करना।

11. ई वर्ग के छात्र में ग्यारहमा कलास से जादे समझदारी के विकास हो जायत। ई लेल छात्र के अंदर रास्ट्रीयता, एकता, रास्ट्रगौरव आउ संस्कृति के प्रति अनुराग के विकास करना।

12. आज भूमंडलीकरन के दौर से गुजरित संचार आउ प्रसार के तकनीक बहुत आगे बढ़ चुकल हे। ई लेल छात्र के आधुनिक वैस्वीकरन में संचार माध्यम के आउ नया-नया तरीका के परयोग करे के छमता के विकास करना।

13. साहित्यक भासा के बौद्धिक छमता बढ़ जाए से बरहमा कलास के छात्र-छात्रा अप्पन मगही के अलावे भारतीय भासा, विदेसी भासा के संस्कृति से परिचय कराके साहितिक मेधा के विकास करना।

14. दैनिक आउ व्यावहारिक जिनगी में मौखिक इया लिखित रूप से अभिव्यक्ति के व्यक्त करे के छमता के विकास तरह-तरह से करना।

15. किसोर उमर के अनुसार विसलेसन, स्वतंत्र अभिव्यक्ति आउ तार्किक छमता के विकास करना।

16. छात्र-छात्रा में बहुभासी प्रकृति के ऐतिहासिक दृष्टिकोन के अइसन व्यापक विकास करना कि ओकर चतुर्दिक विकास हो सके।

17. किसोरावस्था के सारीरिक, मानसिक आउ आत्मिक स्वरूप के अइसन विकास कर देना कि ऊ हर चुनौती के सामना कर सके जेकरा से ओकर छमता, प्रतिभा आउ भासा के संवर्धन हो सके।

18. बरहमा वर्ग में आवित-आवित विद्यार्थी अपने-आप अनुसासित होवे लगऽ हे। ई लेल मगही भासा के माध्यम से किसिम-किसिम के ग्यान आउ अनुसासन के विविध छेत्र में ओकरा लाभ उठावे लायक बनावल जाए।

19. बरहमा कलास के विद्यार्थी के उमर अइसन पड़ाव पर पहुँच जा हे जहाँ ओकर मानसिक विकास, वैचारिक स्तर पर मतभेद, विरोध आउ टकराव के इस्थिति पैदा कर देवऽ हे। ई लेल पाठयक्रम के माध्यम से तर्कपूर्ण आउ संवेदनसील व्यवहार से सान्तिपूर्ण संवाद, परिस्थिति आउ छमता के विकास करना।

20. भासा आउ साहित के मजबूती बेआकरन आउ रचना के जानकारी से होवऽ हे। पाठ्यक्रम में एही लेल मगही बेआकरन आउ मगही भासा विकास के इतिहास जाने ला अलग से पुस्तक रक्खल गेल हे जेकरा से छात्र-छात्रा में भासागत कौसल के अधिक विकास हो सके।

पाठ्य-पुस्तक

1. पाटलि, भाग – 2
2. मगही बेआकरन आउ रचना
3. मगही भासा के विकास के इतिहास

अंक विभाजन

1. पाटलि, भाग – 2

(क) **गद्य भाग** – 35 अंक

(i) पाठ् के विसय–वस्तु पर आधारित बोधात्मक प्रस्न

(ii) गद्यांस पर अधारित लघुत्तरात्मक प्रस्न

(iii) गद्यांस पर अधारित अर्थ–ग्रहन आउ सप्रसंग व्याख्या

(ख) **पद्य भाग** — 35 अंक

(i) काव्यांस के सौन्दर्य बोध पर प्रस्न

(ii) काव्यांस पर अधारित लघुत्तरात्मक प्रस्न

(iii) पाठ के विसय–वस्तु पर अधारित प्रस्न

(iv) काव्यांस के सप्रसंग व्याख्या

2. **मगही बेआकरन आउ रचना** –20 अंक

(क) निबंध लेखन

(ख) पत्र–लेखन

(ग) छन्द

(घ) अलंकार

(ङ) बेआकरन

3. **मगही भासा के विकास के इतिहास**–10 अंक

बारहमा वर्ग मगही भासा के गद्य–पद्य संगरह में मगही के रास्ट्रीय स्तर के बिहार के जे प्रमुख रचनाकार हथ, उनका अस्थान देवल गेल हे।

1. ग्यारहमा कलास में बेयाकरन के बरन बिचार आउ सबद बिचार आउ पत्र-लेखन पढ़ावल जायत।
2. बारहमा कलास में वाक्य बिचार, चिह्न बिचार आउ छन्द बिचार आउ निबंध पढ़ावल जायत।
3. मगही भासा के बिकास के इतिहास के प्राचीन काल ग्यारहमा कलास में पढ़ावल जायत।
4. बारहमा कलास में मगही के भासा के बिकास के इतिहास के आधुनिक काल आउ मगही आन्दोलन पढ़ावल जायत।

गद्य

1. मगध के सभ्यता-संस्कीरती पर ललित निबंध
2. मगही के महत्ता–मगही भासन
3. सैनिक के देसभक्ति पर एकांकी–जुद्ध न होवे
4. सिच्छा के महत्ता–कहानी–विद्या
5. पारिवारिक संबंध कहानी–दरकल खपरी
6. समाज सेवा सबद चित्र-विनोबाजी
7. रास्ट्रीय त्रासदी बाढ़ पर कहानी–दहाड़
8. गरीबी से जूझित मजदूर वर्ग पर कहानी–जोगाड़
9. बिहार से मजदूर पलायन कहानी–सनेह के आँधी
10. साम्प्रदायिक सौहार्द आउ सामंतवाद पर कहानी–नईम मास्टर
11. नक्सलवादी आंदोलन पर कहानी–मेहुदायल बुल्लेट
12. राजनीतिक पाखंड पर कहानी–भक्त भेलन भगवान

पद्य

1. भक्ति प्रधान गीत–संत कवि के गीत
2. देसभक्ति—हम्मर बगिया के रंग–बिरंग फूल

3. किसान–चेतना—इसरा महादे

4. गरीबी–चित्रन (प्रगतिवाद)–ए मलकिनी तनी भात दऽ

5. गाँव में आन्तरिक कलह–कहाँ भुलायल गाँव

6. नारी–व्यथा (नारी–बिमर्स)–अधरतिया के बँसुरी

7. वात्सल्य सम्बन्ध (मुक्त छंद)–भूलल–बिसरल गाँव

8. नारी अस्मिता (नारी–स्वाभिमान)–अपना के पहचानऽ

9. प्रकृति चित्रन–ठठा–ठठा के बरसलो हे मेघ, बरसे दऽ

10. गौरव–गान—बिहार–गौरव

11. महँगाई, बेरोजगारी–जिन्दगी अतुकांत कविता

12. दलित विमर्स–(दलित चेतना)–इतिहास